IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में मतदान व्यवहार के निर्धारक:

डॉ. संजय पाण्डेय
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान
नेहरू ग्राम भारती मानित
विश्वविद्यालय, प्रयागराज उ. प्र.
sanjayp.2425@gmail.com

सारांश

समकालीन विश्व में लोकतंत्र को उसकी अनेक कमियों के बावजूद सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था के रूप में स्वीकार किया जाता है। लोकतंत्र में राजनीतिक सत्ता जनता में निवास करती है। वर्तमान समय में जनता प्रत्यक्ष रूप से स्वयं शासन में भाग न लेकर अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से भाग लेती है। इसलिए इसे प्रतिनिधिमूलक अथवा अप्रत्यक्ष लोकतंत्र कहा जाता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में संविधान निर्माताओं ने भारत के लिए इसी प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्रात्मक शासन को स्वीकार किया। इसमें जनता निश्चित अवधि के लिए मताधिकार के माध्यम से अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है। यही जनप्रतिनिधि शासन-शक्ति के धारक व प्रयोगकर्ता बन जाते हैं। चुनाव में मतदान के अनेक निर्धारक तत्व होतें हैं। विभिन्न मुद्दों व कार्यक्रमों से प्रभावित होकर मतदाता किसी राजनीतिक दल या प्रत्याशी के पक्ष अथवा विपक्ष में मतदान करता है। मतदाता अपने मत के माध्यम से जो भावना व्यक्त करता है वह राजनीतिक व्यवहार ही मतदान व्यवहार कहलाता है। इस प्रकार मतदान व्यवहार का तात्पर्य उन निर्धारक तत्वों अथवा कारकों से है जो मतदाताओं को किसी राजनीतिक दल या प्रत्याशी के पक्ष अथवा विपक्ष में मतदान के लिए प्रभावित करते हैं। मतदान व्यवहार के इन

निर्धारक कारकों में जाति, धर्म, राजनीतिक दल, नेतृत्व, क्षेत्रवाद, आयु-लिंग, आर्थिक परिस्थिति व तात्कालिक परिवेश प्रमुख हैं। भारत में विभिन्न चुनावों में ये निर्धारक कारक मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। परन्तु किसी चुनाव में मतदान व्यवहार के कौन से निर्धारक कारक कितना प्रभाव डालते हैं, इस विषय में स्पष्ट रूप से कुछ भी कहना सम्भव नहीं है। ये निर्धारक कारक अलग-अलग राजनीतिक व्यवस्थाओं व निर्वाचन क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।

मुख्य शब्द

लोकतंत्र, प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र, राजनीतिक व्यवस्था, राजनीतिक सहभागिता, वोट-बैंक राजनीतिक दल, मतदान व्यवहार, क्षेत्रवाद, विचारधारा

भूमिका

प्रस्तुत शोध-पत्र 'भारत में मतदान व्यवहार के निर्धारक' भारत में मतदान व्यवहार पर केन्द्रित है। मतदान व्यवहार का सम्बन्ध लोकतंत्र व चुनाव-तंत्र से है। लोकतंत्र का मुख्य आधार शान्तिपूर्ण सत्ता परिवर्तन है और इसका सर्वाधिक उपयुक्त साधन समयबद्ध, स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव है। चुनाव में मतदान को प्रभावित करने वाले अनेक तत्व होते हैं। यही तत्व मतदान व्यवहार के निर्धारक कहलाते हैं। मतदान व्यवहार के ये निर्धारक चुनावों को विभिन्न रूपों में प्रभावित करते हैं। मतदान व्यवहार के इन विभिन्न निर्धारक कारकों का वर्गीकरण, अध्ययन और विश्लेषण इस शोध-पत्र में किया गया है। भारत में चुनाव और मतदान व्यवहार का अध्ययन लोकतांत्रिक व्यवस्था की समृद्धि तथा चुनाव में पारदर्शिता के लिए आवश्यक है। मतदान व्यवहार क्या है ? भारतीय चुनावों में मतदाताओं के मतदान व्यवहार के निर्धारक कारक कौन-कौन से हैं ? मतदाताओं के मतदान व्यवहार को सही दिशा कैसे प्रदान की जा सकती है ? प्रस्तुत शोध-पत्र इन प्रश्नों के उत्तर खोजने का एक प्रयास है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध-पत्र को पूर्ण करने में इस विषय पर पूर्व में लिखे गए साहित्य का अवलोकन, विश्लेषण व मूल्यांकन किया गया है। इन शोध साहित्यों का विवरण निम्नवत है :

एन.जी.एस. किनी ने अपनी पुस्तक 'द सिटी वोटर इन इंडिया' (1974) में स्पष्ट किया है कि समुदाय एकमत से निर्णय करता है कि किस दल या व्यक्ति को वोट किया जाए।

पीटर सी. फिशमेन अपनी पुस्तक 'द थ्योरी ऑफ सोशल चॉइस'(1976) में व्यक्तियों की पसन्द में परिवर्तनशीलता के कारणों को स्पष्ट किया है।

शेल. सी. नाना ने अपनी पुस्तक 'स्पेशल फ्रेगमेंटेशन ऑफ पोलिटिकल बिहेवियर इन इंडिया' (1989) में निष्कर्ष निकाला कि राजनीतिक दलों का चरित्र मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है।

सुमित्रा कुमार जैन ने 'कास्ट एंड पॉलिटिक्स इन बिहार'(1989) में जातीय राजनीति के चुनावों पर प्रभाव का अध्ययन किया।

धर्म चंद जैन ने अपनी पुस्तक 'भारतीय लोकतंत्र' (2000) में लिखा कि लोकतंत्र की सार्थकता स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव व्यवस्था पर निर्भर करती है। इसके साथ ही राजनीतिक दलों की सहभागिता और मतदान व्यवहार का विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है।

एच.आर. मुखी ने अपनी पुस्तक 'पॉलिटिकल साइंस' (2003) में यह स्पष्ट किया कि मतदान व्यवहार जाति,धर्म व अन्य कारकों से प्रभावित होता है।

मनोज शर्मा ने अपनी पुस्तक 'इंडियन गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स' (2004) में विचार दिया कि जाति, धर्म, क्षेत्रवाद, विचारधारा व समुदाय वे महत्वपूर्ण कारक हैं जो मतदाताओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

संजय कुमार ने अपनी संपादित पुस्तक 'इंडियन पॉलिटी कांस्टीट्यूशन एंड पार्लियामेंट (2006) में निष्कर्ष निकाला कि मतदान व्यवहार में राजनीतिक कारक जैसे विचारधारा, पारिवारिक व दलीय सम्बन्ध महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

चुन्नीलाल लालूभाई पारेख ने अपनी पुस्तक 'एमिनेंट इंडियंस ऑन इंडियन पॉलिटिक्स'(2017) में भारतीयों की अपने अधिकारों एवं राजनीति के प्रति बढ़ रही जागरूकता का विवेचन किया है।

रजनी कोठारी ने अपनी पुस्तक 'भारत में राजनीति कल और आज' (2020) में जाति और लोकतांत्रिक राजनीति की अन्योन्यक्रिया को जातियों का राजनीतिकरण कहा।

उपर्युक्त अध्ययन द्वारा शोध विषय से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य की समीक्षा कर शोध-पत्र को पूर्ण किया गया है। इस शोध-पत्र में वस्तुनिष्ठता एवं विश्वसनीयता लाने का यथासम्भव प्रयास किया गया है। तथ्यों का संकलन अनेक स्रोतों से किया गया है। इनमें विभिन्न पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएं सम्मिलित है। प्राप्त तथ्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

मतदान व्यवहार

लोकतंत्र को राजनीतिक व सामाजिक संगठन का श्रेष्ठतम प्रकार माना जाता है। शासन का तो यह सर्वोत्कृष्ट रूप बन गया है। लोकतंत्र में राजनीतिक व शासन व्यवस्था से सम्बन्धित सत्ता जनता में निवास करती है। इसमें जनता प्रत्यक्ष रूप से स्वयं शासन में भाग न लेकर अपने प्रतिनिधियों को चुनकर अपनी तरफ से उन्हें शासन का अधिकार प्रदान करती है। यही जनप्रतिनिधि शासन शक्ति के धारक व प्रयोगकर्ता बन जाते हैं। इस कारण प्रतिनिधियों की भूमिका सम्पूर्ण शासन व्यवस्था की नियामक बन जाती है। अतः आज का लोकतंत्र प्रत्यक्ष लोकतंत्र न होकर अप्रत्यक्ष लोकतंत्र या प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र है। निश्चित अवधि के लिए जनता अपने मताधिकार का प्रयोग करके अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है जिनके माध्यम से शासन-तंत्र को संगठित किया जाता है।

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का मुख्य आधार शान्तिपूर्ण सत्ता परिवर्तन है और इसका सर्वाधिक उपयुक्त साधन समयबद्ध,स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव है। अतः आज लोकतंत्र अब्राहम लिंकन की परिभाषा जनता का, जनता के द्वारा, और जनता के लिए शासन से आगे बढ़कर चुनाव का,चुनाव के द्वारा और चुनाव के लिए स्थापित शासन हो गया है। चुनाव के द्वारा अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से जनता द्वारा जनता के शासन का निर्माण होता है। चुनाव में लोगों को मत (वोट) देने का अधिकार

प्राप्त होता है, जिसके माध्यम से वे अपने लिए उपयुक्त प्रतिनिधि का चुनाव कर शासन में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करते हैं। मताधिकार का प्रयोग राजनीतिक सहभागिता का सबसे प्रचलित व सुस्पष्ट तरीका है। मतदान की प्रक्रिया मतदाता के व्यवहार के व्यापक आयाम का एक पक्ष है। मतदाता व्यवहार पर ही लोकतंत्र का स्वरूप व भविष्य अवलम्बित है। स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव मतदाताओं के मतदान के प्रति स्वस्थ व सकारात्मक दृष्टिकोण व व्यवहार के बिना सम्भव नहीं हो सकता। वस्तुतः मतदाता व्यवहार ही वह प्रमुख आधार तत्व है जो चुनाव को आदर्श अथवा विकृत स्वरूप प्रदान करता है और लोकतंत्र को सार्थक अथवा निरर्थक सिद्ध करता है । वस्तुतः मतदाता व्यवहार स्वयं में चुनाव व लोकतंत्र की आधारशिला है। चुनाव के समय मतदान अनेकानेक बातों से प्रभावित होता है तथा मतदाता की अपनी अवधारणा के आधार पर ही उसका व्यवहार अभिव्यक्त होता है। विभिन्न मुद्दों व कार्यक्रमों से प्रभावित होकर वह किसी राजनीतिक दल या प्रत्याशी के पक्ष या विपक्ष में मतदान करता है। इस प्रकार वह अपने सामाजिक व राजनीतिक योगदान को सुनिश्चित करता है। इस प्रक्रिया में चुनाव के द्वारा जन सामान्य की सत्ता में सीधी भागीदारी सुनिश्चित होती है। लोकतंत्र में जनता अर्थात मतदाता अपने मत या वोट के माध्यम से जो इच्छा प्रकट करता है वह राजनीतिक व्यवहार ही साधारण अर्थों में मतदान व्यवहार कहा जाता है।

लोकतंत्र को गतिशील व सशक्त बनाने में समयबद्ध चुनाव और इसमें मतदाताओं की सहभागिता अनिवार्य है। चुनाव में जनता अपने मत के माध्यम से इस सहभागिता को सुनिश्चित करती है। जनता का यही राजनीतिक व्यवहार मतदान व्यवहार कहलाता है। मतदान व्यवहार जनता के राजनीतिक व्यवहार का एक अनिवार्य पहलू है। मतदान व्यवहार का अर्थ है कि मतदाता किन भावनाओं से प्रेरित होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करता है। संक्षेप में मतदान व्यवहार का तात्पर्य एक मतदाता के उस चुनाव व्यवहार से है जिसका प्रदर्शन वह चुनाव अभियान एवं मतदान में करता है। मतदान के समय किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह का मनोभाव जो उसके मतदान के माध्यम से अभिव्यक्त होता है मतदान व्यवहार कहलाता है। दूसरे शब्दों में ऐसा कारक जो किसी मतदाता के मतदान के समय के व्यवहार को तय करता हो मतदान व्यवहार कहलाता है। इस प्रकार मतदान व्यवहार का तात्पर्य उन कारकों के अध्ययन से है जो जनमानस की मत-शक्ति को प्रभावित करते हैं। मतदाता अपने मताधिकार के माध्यम से किसी भी राजनीतिक व्यवस्था को स्थापित या विस्थापित करते हैं।

कुछ विद्वानों ने मतदान व्यवहार का अर्थ निर्णय लेने से लगाया है। इनके अनुसार मतदान व्यवहार नागरिकों द्वारा राजनीति में भाग लेने का निर्णय है जो इच्छा से प्रोत्साहित होता है। कुछ अन्य विद्वानों ने मतदान व्यवहार को सरकारी कार्यों का क्रमिक मूल्यांकन एवं उनके सन्दर्भ में अपने निर्णय की अभिव्यक्ति माना है। इसका अर्थ है कि मतदान की प्रक्रिया में मतदाता सरकार तथा विभिन्न राजनीतिक दलों के कार्यकलापों की समीक्षा करता है और उन पर अपना निर्णय देता है जो हार जीत में परिलक्षित होता है। सामाजिक विज्ञान विश्वकोश के अनुसार मतदान व्यवहार वैयक्तिक प्राथमिकताओं को सामूहिक निर्णय में संकलित करने का एक साधन है। प्लानो व रिग्स के अनुसार 'सार्वजनिक चुनाव में लोग किस प्रकार वोट देते हैं इससे सम्बन्धित अध्ययन ही मतदान व्यवहार है और इसमें वह कारण भी सम्मिलित है कि लोग मतदान उसी प्रकार क्यों करते हैं।' डोनाल्ड ई. स्टोक्स के अनुसार मतदान व्यवहार से अभिप्राय मतदाता के मत देने तथा इसे प्रभावित करने वाले कारकों के अध्ययन से है।

मतदान व्यवहार के निर्धारक कारक

राजनीतिक व्यवस्था में चुनावों की भूमिका को मतदाताओं के मतदान व्यवहार के आधार पर समझना सम्भव है। मतदान व्यवहार के अध्ययन का केन्द्र-बिन्दु यह जानना होता है कि मतदाता मतदान के समय किस तथ्य से सर्वाधिक प्रभावित रहता है। वह कौन से मुद्दे हैं जो आम मतदाता को अपना मत किसी राजनीतिक दल या प्रत्याशी को देने के लिए प्रेरित करते हैं। मतदान व्यवहार के इन विभिन्न निर्धारक कारकों का अध्ययन इस वर्गीकरण के माध्यम से किया जा सकता है।

1.जाति

जाति भारतीय समाज का यथार्थ व सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण आधार है। भारतीय समाज जाति व्यवस्था के आधार पर अनेक वर्गों में विभाजित है। जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज के सभी पक्षों को प्रभावित किया है जिसमें उसका राजनीतिक पक्ष भी सम्मिलित है। विभिन्न जातीय समूह दबाव समूह की भूमिका का निर्वहन करते रहे हैं। ये समूह जातियों को राजनीतिक दृष्टिकोण से

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation

गतिमान करने का प्रयास भी करते हैं। इसी कारण जाति मतदान व्यवहार का प्रमुख निर्धारक कारक है। घनश्याम शाह के अनुसार 'जापान में मतदान व्यवहार समूह निर्धारित है ब्रिटेन में वर्ग निर्धारित है अमेरिका में प्रजाति निर्धारित है तथा भारत में जाति निर्धारित है।'

भारत में राजनीतिक दलों ने जाति को वोट बैंक के रूप में प्रयोग करके उसका उपयोग अपने हितों के लिए किया है। भारत के विभिन्न राज्यों में स्थापित जातीय संगठन राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप निर्धारित करते हैं। जातियां संगठित होकर राजनीति में भाग लेती हैं और जातिगत भारतीय समाज में जातियां ही राजनीतिक शक्तियां बन गई है। भारत में राजनीति जाति के इर्द-गिर्द घूमती है। जाति प्रमुखतम राजनीतिक दल है। यदि व्यक्तियों को राजनीति की दुनिया में आगे बढ़ना है तो उसे अपने साथ जाति को लेकर चलना होगा। भारत में राजनीति जातीय समुदायों को संगठित करके उनके समर्थन से सत्ता तक पहुंचने का प्रयास करती है। राजनीति ने जाति से अपनी अभिव्यक्ति के लिए सामग्री प्राप्त की है और उसे अपनी योजना के अनुसार ढाला है। इसके साथ ही जाति समूहों ने राजनीति को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बना कर अस्मिता का दावा पेश करने और राज व्यवस्था में अपनी स्थिति सुधारने का अवसर प्राप्त किया है। राजनीति व जाति का यह अन्तर्सम्बन्ध भारत व विभिन्न राज्यों के सम्बन्ध में पूर्णतः सत्य है।

भारत में जाति राजनीति और चुनाव का सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। यहां राजनीति का संचालन जातीय मुहावरों के बिना नहीं हो सकता। भारत में जाति मतदान व्यवहार का निर्धारण करने वाला प्रमुख तत्व है। राजनीतिक दल निर्वाचन क्षेत्रों की जातीय संरचना के आधार पर प्रत्याशियों का चयन करते हैं। विभिन्न मतदाता समूह मतदान व्यवहार के निर्वहन में अपनी जाति या उपजाति के समीकरण को दृष्टि में रखते हैं। राजनीतिक दल भी अपने प्रत्याशी चयन में जाति को ध्यान में रखते हैं। चुनाव जातियों को संगठित करने का माध्यम बन जाते हैं। भारत में विभिन्न राजनीतिक दल सत्ता प्राप्त करने के लिए जातीय समूहों को संगठित करते हैं। इस प्रकार राजनीति जाति का सहारा लेती है। दूसरी ओर जाति अपने हितों की रक्षा के लिए राजनीति का प्रयोग करती है। इस प्रकार जाति व राजनीति परस्पर सम्बन्धित व एक दूसरे के पूरक हैं। परन्तु यह कहना उचित नहीं है कि भारतीय मतदाता प्रत्येक परिस्थिति में जाति से प्रभावित होता है। यदि चुनाव के समय कोई महत्वपूर्ण प्रश्न या

समस्या सामने हो तो मतदान व्यवहार का जाति कारक गौड़ हो जाता है। परन्तु सामान्य परिस्थितियों में जाति मतदान व्यवहार का प्रमुख निर्धारक कारक है।

2.धर्म

भारत सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से धर्मप्राण परन्तु संवैधानिक दृष्टि से धर्मनिरपेक्ष राज्य है। इस धर्मनिरपेक्ष राज्य का अपना कोई राजकीय धर्म नहीं है तथा वह सभी धर्मों से समान व्यवहार करता है। भारत का संविधान धर्म के आधार पर भेदभाव का निषेध करता है। यहां राजनीतिक सत्ता का अन्तिम स्रोत किसी दैवी या पारलौकिक शक्ति को न मानकर जनता को माना गया है। धर्म के साथ राजनीति के सम्बन्ध का निर्धारण धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत से होता है। इसके बावजूद कुछ विचारक भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य नहीं मानते क्योंकि उनके अनुसार यहां धर्म और राजनीति के बीच पूर्ण पृथक्करण सम्भव ही नहीं है। राजनीति व धर्म के बीच यह घनिष्ठता चुनाव के दौरान प्रायः दिखाई पड़ती है। भारत में कोई भी चुनाव धर्म और सम्प्रदाय के समीकरण के बिना पूर्ण नहीं होता है। सभी राजनीतिक दल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चुनाव में धर्म या सम्प्रदाय का उपयोग करते हैं। चुनाव में धर्म व संप्रदाय के प्रभाव का कारण यह है कि विभिन्न राजनीतिक दल अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए जनता की धार्मिक व साम्प्रदायिक भावनाओं का उपयोग करते हैं। भारत में अधिकांश राजनीतिक दल और उसके नेता चुनाव में धर्म व सम्प्रदाय की दलीलों के आधार पर वोट मांगते हैं। मतदान के अवसर पर वोट मांगने वाले और मतदान करने वालों के आचरण पर धार्मिक तत्वों छाए रहते हैं। इन परिस्थितियों में किसी भी चुनाव में धर्म या सम्प्रदाय मतदान व्यवहार को निर्धारित करने वाला प्रमुख कारक सिद्ध होता है।

प्रत्येक राजनीतिक दल चुनाव में धर्म के आधार पर मतों को प्राप्त करने का प्रयास प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से करते हैं और मतदाता इस आधार पर मतदान भी करते रहे हैं। इस प्रकार चुनाव में धर्म का सहारा लेने वाले दलों का राजनीतिक प्रक्रिया पर व्यापक प्रभाव होता है। मतदाता भी धर्म से प्रभावित होकर मतदान करते हैं। राजनीतिक दल धर्म और सम्प्रदाय की दलीलों के आधार पर मतदान की अपील करते हैं। धर्मनिरपेक्ष राज्य में राजनीति और चुनाव धर्म से अलग होने चाहिए। परन्तु सच्चाई तो यह है कि धर्म का चुनाव में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यापक उपयोग किया जाता

है। राजनीतिक दल चुनाव में धर्म व सम्प्रदाय का उपयोग करते हैं और मतदाता भी धर्म और सम्प्रदाय से प्रभावित होकर मतदान करते हैं। इस प्रकार मतदान व्यवहार धर्म व सम्प्रदाय से प्रभावित होता है। अतः धर्म व सम्प्रदाय मतदान व्यवहार का एक प्रमुख निर्धारक तत्व है।

3.राजनीतिक दल

राजनीतिक दल व राजनीतिक स्थायित्व भी मतदान व्यवहार का एक निर्धारक है। भारत में मतदाताओं का एक वर्ग अपनी दलीय पहचान रखता है। वह चुनाव में उसी दल विशेष को प्रतिबद्धता के साथ मतदान करता है। राजनीतिक दलों की विचारधारा, नीतियां व कार्यक्रम मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। ये विचारधाराएं, नीतियां और कार्यक्रम राजनीतिक दल विशेष के लिए प्रतिबद्ध मतदाताओं के एक समूह का निर्माण करती हैं जो अपनी दलीय प्रतिबद्धता के कारण उसी दल को मतदान करते हैं। परन्तु राजनीतिक दलों के प्रति मतदाता तर्कसंगत दृष्टि भी रखते हैं। ऐसे में कोई भी राजनीतिक दल परम्परागत तरीके से सामान्य जनमानस में पूर्व की भांति अपनी पहचान स्थापित करने में निष्फल होने लगा है। आज कोई भी राजनीतिक दल चुनाव में मतदाता के स्थायी समर्थन के प्रति आश्वस्त नहीं हो सकता है। परिणामस्वरूप विभिन्न चुनावों में मतदान व्यवहार विभिन्न राजनीतिक दलों के पक्ष में निरन्तर परिवर्तनशील होता रहता है।

इकबाल नारायण का मत है कि भारत में प्रबुद्ध वर्ग के मतदाता विचारधारा,कार्यक्रम व नीतियों से अधिक प्रभावित होते हैं और आम भारतीय मतदाता इनसे कम प्रभावित होते है। विभिन्न चुनावों में राजनीतिक दलों के घोषणापत्र उनकी नीतियां व कार्यक्रम प्रायः जनसाधारण की समझने की वस्तु न होकर जागरूक व प्रबुद्ध वर्ग के समझने की वस्तु होते हैं। फलस्वरुप राजनीतिक दलों की विचारधारा,कार्यक्रम व नीतियां प्रबुद्ध वर्ग के मतदान व्यवहार को प्रभावित करती हैं। जनसाधारण के मतदान व्यवहार पर इनका विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

राजनीतिक स्थायित्व जैसे कारक भी चुनाव में मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। भारतीय मतदाता सामान्यतः केन्द्र व राज्य में सुदृढ व स्थायी शासन चाहते हैं। भारतीय मतदाताओं ने अनेक अवसरों पर अपने मतदान व्यवहार से यह स्पष्ट कर दिया है कि वे केन्द्र व राज्यों में ऐसी सरकार चाहते

हैं जो सक्षम हो तथा देश को स्थायित्व प्रदान कर सके। इस प्रकार राजनीतिक दल व राजनीतिक स्थायित्व मतदान व्यवहार का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।

4.नेतृत्व व व्यक्तित्व

मतदान व्यवहार का निर्धारण करने वाला एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक नेतृत्व व व्यक्तित्व भी है। कभी-कभी मतदाता मतदान व्यवहार हेतु किसी भी अन्य कारक की अपेक्षा नेतृत्व व व्यक्तित्व को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। मतदान व्यवहार का यह कारक मुख्य रूप से अध्यक्षीय शासन व्यवस्था से जुड़ा है। ऐसी शासन व्यवस्थाओं में नेतृत्व व व्यक्तित्व के मुद्दे पर ही प्रायः चुनाव होते हैं। परन्तु संसदीय शासन व्यवस्था में भी इसका महत्व कम नहीं है। राजनीतिक व्यवस्था में सक्रिय राजनेता मतदाताओं में अपनी ऐसी छवि बना लेते हैं कि लोग उस नेता के व्यक्तित्व व नेतृत्व से प्रभावित होकर मतदान करते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में आइजनहावर ब्रिटेन में मार्गरिट थैचर भारत में पंडित जवाहरलाल नेहरू, इन्दिरा गांधी का व्यक्तित्व व नेतृत्व ऐसा ही कारक रहा है। हाल के वर्षों में अटल बिहारी बाजपेयी व नरेन्द्र मोदी भी ऐसे ही कारक सिद्ध हुए हैं। भारत में प्रादेशिक स्तर पर भी ऐसे अनेक व्यक्तित्व व नेतृत्व हुए हैं जिन्होंने मतदान व्यवहार को प्रभावित किया है। इनमे एन. टी रामाराव, नवीन पटनायक,ममता बनर्जी, एम. करुणानिधि, जे.जयललिता, मुलायम सिंह यादव और मायावती इत्यादि प्रमुख हैं। कभी-कभी मतदान व्यवहार का नेतृत्व व व्यक्तित्व कारक अपनी भूमिका सकारात्मक के साथ-साथ नकारात्मक रूप में भी प्रदर्शित करता है। इसके परिणामस्वरूप चुनावों में सम्बन्धित राजनीतिक दलों को अपने नेतृत्व व व्यक्तित्व के कारण पराजय का भी सामना करना पड़ता है। इस प्रकार नेतृत्व व व्यक्तित्व भारत में मतदान व्यवहार का एक प्रमुख निर्धारक है।

5.क्षेत्रवाद

क्षेत्रवाद क्षेत्रीय व स्थानीय हितों की अभिवृद्धि के प्रति आग्रह है। क्षेत्रवाद वह मनोभाव और आचरण व्यवहार है जिसमें व्यक्ति अन्य क्षेत्रों व उसमें रहने वाले व्यक्तियों की तुलना में अपने क्षेत्रों व उसमें रहने वाले व्यक्तियों को प्राथमिकता देता है। क्षेत्रवाद राष्ट्रीय हितों की तुलना में क्षेत्रीय हितों को अधिक महत्व प्रदान करता है। इस प्रकार क्षेत्रवाद एक संकीर्ण अवधारणा है। राजनीति में क्षेत्रवाद

के वाहक प्राय: क्षेत्रीय दल होते हैं। भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों के विकास तथा गठबंधन सरकारों के दौर में क्षेत्रवाद का विकास तीव्र गति से हुआ। विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय दलों की सफलता का कारण क्षेत्रवाद की भावना है। क्षेत्रवाद की बढ़ रही प्रवृत्ति के कारण सम्बन्धित मतदाता क्षेत्रवाद के नाम पर मतदान करते हैं। ऐसे में मतदान व्यवहार क्षेत्रवाद से प्रभावित होने लगा है। भारत में लोकसभा चुनाव को भी मतदान व्यवहार के क्षेत्रीय कारक प्रभावित करते हैं। इसका लाभ प्राय: क्षेत्रीय दलों को होता है और वे राष्ट्रीय राजनीति में व्यापक सफलता प्राप्त करते हैं। परन्तु यदि क्षेत्रीय दल व उनकी सरकारें अपने-अपने राज्यों में अच्छा शासन नहीं दे पाती तो इसका नुकसान भी उन्हें ही उठाना पड़ता है। वे राष्ट्रीय राजनीति में कमजोर स्थिति में आ जाते हैं। इससे क्षेत्रवाद की भावना कमजोर होती है और राज्यों के चुनाव भी राष्ट्रीय मुद्दों के आसपास केन्द्रित हो जाते हैं। इस प्रकार क्षेत्रवाद मतदान व्यवहार को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूप में प्रभावित करता है। भारत में क्षेत्रवाद मतदान व्यवहार का एक प्रमुख निर्धारक है।

6.आयु-लिंग

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों में आयु-लिंग का भी महत्वपूर्ण स्थान है। चुनाव में विभिन्न आयु-वर्ग व लिंग आधारित मुद्दे मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। युवा, बुजुर्ग व स्त्रियां अपने-अपने व्यक्तिगत मुद्दों के आधार पर अपनी-अपनी मतदान प्राथमिकताएं निर्धारित करते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए राजनीतिक दल युवाओं, बुजुर्गों और महिलाओं के लिए नीतियां प्रस्तुत करते हैं। युवाओं के लिए शिक्षा व रोजगार के मुद्दे, महिलाओं के लिए महिला सुरक्षा व संरक्षा के मुद्दे तथा वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण से सम्बन्धित अनेक आश्वासन विभिन्न राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों में सम्मिलित किए जाते हैं। इन मुद्दों को घोषणापत्रों में सम्मिलित किए जाने से सम्बन्धित पक्ष मतदान में उत्साह से भाग लेते हैं। इसी को ध्यान में रखकर विभिन्न राजनीतिक दल अनेक युवा-केन्द्रित नीतियों जैसे शिक्षा व रोजगार आदि की चर्चा करते हैं, जिसका मतदान व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण से सम्बन्धित नीतियां यदि राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों में सम्मिलित होती हैं तो इनका भी मतदान व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार आयु

व लिंग कारक मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। भारत में विभिन्न स्तरों पर आयोजित चुनावों के मतदान व्यवहार का निर्धारण करने में आयु-लिंग कारक की महत्वपूर्ण रहती है।

7.आर्थिक परिस्थिति

भारत के चुनावी लोकतंत्र में मतदान व्यवहार के निर्धारकों में आर्थिक परिस्थिति की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय समाज आर्थिक दृष्टिकोण से एक विषमताग्रस्त समाज है। कमजोर आर्थिक स्थिति वाले मतदाताओं को चुनाव में प्रत्याशियों व राजनीतिक दलों द्वारा धन के बल पर आकर्षित करने का प्रयास किया जाता है। चुनावों में धन का प्रलोभन देकर मतों को खरीदने का प्रयास भी किया जाता है और गरीब मतदाता इस लालच में आ भी जाते हैं। मतदान की पूर्व संध्या पर प्रत्याशियों की तरफ से पैसे बांटे जाते हैं। कोई भी चुनाव उनके लिए अधिक लाभप्रद होता है जिनके पास धन खर्च करने का सामर्थ्य अधिक होता है। ऐसे राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों के पक्ष में मतदान व्यवहार प्रभावित हो जाता है। परन्तु जब व्यापक जनमानस राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों के विरुद्ध हो जाता है तो धन का सामर्थ्य सीमित प्रभाव ही डाल पाता है। चुनाव में धनिक वर्ग का मतदाता यथास्थितिवादी होता है और सत्तारूढ़ दल को ही मतदान करता है, जबकि गरीब वर्ग का मतदाता प्रायः विपक्ष को मतदान करता है। कृषि और औद्योगिक विकास की अच्छी स्थिति सत्तारूढ़ दल के पक्ष में तथा महंगाई, प्राकृतिक आपदा जैसी स्थितियां विपक्ष-हितैषी सिद्ध होती हैं। आजकल सत्तारूढ़ सरकारें आम जनता के बैंक खातों में पैसों का अन्तरण कर एक लाभार्थी वर्ग तैयार कर रहीं हैं। ये लाभार्थी उस सत्तारूढ़ राजनीतिक दल को मतदान करते हैं। इस प्रकार मतदान व्यवहार का आर्थिक परिस्थिति कारक प्रत्येक चुनाव परिणाम को किसी न किसी रूप में निर्धारित करता है।

8.तात्कालिक परिवेश

तात्कालिक परिवेश किसी भी चुनाव में मतदान व्यवहार का महत्वपूर्ण कारक होता है। यह परिवेश राष्ट्रीय व स्थानीय मुद्दों तथा घटनाओं से जुड़ा हो सकता है। इसके सामाजिक व आर्थिक आयाम होते हैं। भ्रष्टाचार, महंगाई, अपराध, कानून व व्यवस्था इत्यादि तात्कालिक परिवेश मतदान व्यवहार

को अवश्य प्रभावित करते हैं। चुनाव के समय की महत्वपूर्ण घटनाएं व मुद्दे जो जनता से प्रत्यक्षतः जुड़ी हों मतदान पर अवश्य ही प्रभाव डालती हैं। राष्ट्रीय स्तर के चुनाव में राष्ट्रीय परिवेश की घटनाएं एवं मुद्दे तथा प्रादेशिक स्तर के चुनाव में स्थानीय परिवेश की घटनाएं व मुद्दे प्रभाव डालते हैं। भारत में मतदान व्यवहार आन्तरिक व बाह्य दोनों घटनाक्रमों व मुद्दों से प्रभावित होता है। प्रादेशिक चुनावों में स्थानीय घटनाओं व मुद्दों का अधिक प्रभाव रहता है। परन्तु कभी-कभी राष्ट्रीय मुद्दे भी प्रादेशिक चुनावों पर प्रभाव डालते हैं। ये तात्कालिक परिवेश, घटनाक्रम व मुद्दे किसी राजनीतिक दल या प्रत्याशी को सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार से प्रभावित करते हैं। ये सभी घटनाक्रम व मुद्दे मतदाता को किसी एक राजनीतिक दल या प्रत्याशी के पक्ष या विपक्ष में मतदान हेतु प्रेरित करते हैं। भारत में मतदान व्यवहार पर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दोनों घटनाक्रमों व मुद्दों का व्यापक प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार तात्कालिक परिवेश कारक मतदान व्यवहार का निर्धारण करने में अपनी भूमिका का निर्वहन करता है।

निष्कर्ष

मतदान व्यवहार के निर्धारक विभिन्न कारक होते हैं जिनका अध्ययन वर्गीकरण के माध्यम से ही किया जा सकता है। परन्तु इस वर्गीकरण की अपनी सीमा है क्योंकि इसमें सभी कारकों का समावेश सम्भव नहीं है। मतदाताओं का एक ऐसा समूह अवश्य होता है जो वर्गीकृत कारकों से इतर अन्य कारकों के आधार पर भी मतदान करता है। इनमें मतदाताओं की व्यक्तिगत रूचि व व्यक्तिगत मुद्दे, सत्ता विरोधी रुझान, ढुलमुल मतदाता,नोटा इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है। ये कारक भी चुनाव में अपनी भूमिका का निर्धारण अवश्य करते हैं।

लोकतंत्र का वर्तमान और भविष्य स्वतंत्र, निष्पक्ष व पारदर्शी चुनाव पर निर्भर है। लोकतांत्रिक चुनावों में मतदान व्यवहार के निर्धारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विकसित देशों में मतदान व्यवहार के राजनीतिक तथा विकासशील देशों में सामाजिक-आर्थिक कारकों पर अधिक बल दिया जाता है। आधुनिक अध्ययनों व शोधों में इन दोनों निर्धारक कारकों पर ध्यान देने की प्रवृत्ति दिखाई देती है ताकि उनके सापेक्षिक प्रभावों को परखा जा सके। भारत जैसे विकासशील समाज में मतदान व्यवहार का अध्ययन राजनीतिक दृष्टिकोण के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण से भी होता

है। भारतीय मतदाताओं का मतदान व्यवहार समय-समय पर बदलता रहता है। कभी वह जाति से प्रभावित होता है तो कभी धर्म उसके निर्णय को प्रभावित करता है। मतदाताओं के ऊपर क्षेत्रवाद के साथ-साथ राष्ट्रीयता व राजनीतिक दल, व्यक्तित्व व धन का प्रभाव भी पड़ता है।इनके अतिरिक्त कभी-कभी राष्ट्रीय व स्थानीय समकालीन मुद्दे भी मतदान व्यवहार का निर्धारण करते हैं। भारत में लोकसभा व विभिन्न प्रदेशों के विधानसभा चुनाव व अन्य स्थानीय चुनावों में भी ये सभी कारक अपनी भूमिका का निर्वहन करते रहे हैं। इस प्रकार मतदान व्यवहार विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है। परंतु किसी चुनाव में मतदान व्यवहार के कौन से कारक कितना प्रभाव डालते हैं इस विषय में स्पष्ट रूप से कुछ भी कहना संभव नहीं है। ये कारक अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्रों व राजनीतिक व्यवस्थाओं में अलग-अलग हो सकते हैं। भारत में लोकसभा व विभिन्न विधानसभाओं के चुनाव में विभिन्न कारक अपनी-अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं।

भारत में चुनाव व मतदान व्यवहार एक जटिल मुद्दा है जिस पर राष्ट्रीय सहमति की अपेक्षा है। देश में लोकसभा व विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में मतदान व्यवहार के कुछ नकारात्मक पक्ष हैं। मतदान व्यवहार के इन नकारात्मक पक्षों में जाति, धर्म व सम्प्रदाय, क्षेत्रवाद इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है। एक स्वस्थ, समृद्ध व शक्तिशाली लोकतंत्र की स्थापना के लिए मतदान व्यवहार के इन नकारात्मक पक्षों को निरुत्साहित किए जाने की आवश्यकता है। इस हेतु आवश्यक है कि मतदान व्यवहार के सकारात्मक पक्षों के प्रति मतदाताओं में जागरूकता पैदा की जाए। इन सकारात्मक पक्षों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सुशासन इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है। एक जागरूक मतदाता मतदान व्यवहार के निर्धारक कारकों में व्यापक राष्ट्रीय हितों व सुशासन से जुड़े मुद्दों को सम्मिलित करता है और उसी आधार पर मतदान करता है। ऐसे जागरूक मतदाता मतदान व्यवहार के संकीर्ण कारकों से प्रेरित होकर मतदान नहीं करते बल्कि व्यापक राष्ट्रीय हितों से जुड़े व्यापक निर्धारक कारकों से प्रेरित होकर मतदान करते हैं। एक स्वस्थ और शक्तिशाली लोकतंत्र के लिए चुनाव और मतदान व्यवहार भी स्वस्थ और सकारात्मक होनें चाहिए। स्वस्थ और सशक्त लोकतंत्र के लिए मतदान व्यवहार के निर्धारकों का भी स्वस्थ और सकारात्मक होना अनिवार्य है। देश के आम जनमानस तथा राजनीतिक वर्ग के नैतिक आत्मबल व इच्छाशक्ति के बलबूते ऐसा सम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गेना सी.बी. 'तुलनात्मक राजनीति और राजनीतिक संस्थाएं' विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. नई दिल्ली 1986

2. दुबे अभय कुमार (संपादक) 'लोकतंत्र के साथ अध्याय' वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2002

3. वर्मा एस. एल. 'उच्चतर आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत' नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर 2002

4. वीर गौतम 'राजनीतिक समाजशास्त्र' ओमेगा पब्लिकेशन नई दिल्ली द्वितीय संस्करण 2012

5. शर्मा जी. एल. 'सामाजिक मुद्दे' रावत पब्लिकेशन जयपुर 2015

6. सईद एस. एम. 'भारतीय राजनीतिक व्यवस्था' भारत बुक सेंटर लखनऊ 2015

7. फिशमेन पीटर सी. 'द थ्योरी ऑफ सोशल चॉइस' प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस अमेरिका 1976

8. जैन धर्मचंद, 'भारतीय लोकतंत्र' प्रिंसवेल पब्लिशर्स जयपुर 2000

9. विप्लव 'इलेक्शन : द रिफ्लेक्शन ऑफ पब्लिक' राहुल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 2015

10. कोठारी रजनी 'भारत में राजनीति कल और आज' वाणी प्रकाशन चौथा संस्करण नई दिल्ली 2020